Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

# कृषि विकास (कृषि विकास प्रसंस्करण उद्योग का प्रभाव)एंव पर्यावरण प्रदूषण: विदिशा जिले का एक अध्ययन

**रमा शंकर शर्मा[1]*, डॉ. स्वाति जैन[2]**

[1] शोध विद्यार्थी, वाणिज्य विभाग, आईईएस विश्वविद्यालय, भोपाल मध्य प्रदेश एम.पी.

[2] सहा. एसो. प्रोफेसर वाणिज्य एंव प्रबंध विभाग आईईएस विश्वविद्यालय, भोपाल मध्य प्रदेश एम.पी.

***सार - प्रस्तुत शोध पत्र विदिशा जिलें मे कृषि विकास एंव पर्यावरण से सम्बन्धित है। अध्ययन क्षेत्र मुख्यतः प्रवाह प्रणाली में वेतवा के अनुकुल उतर-पूर्व दिशा में प्रवाहित पष्चिम से दक्षिण होने वाली नदियों द्वारा निर्मित मैदान के उपजाऊ भूभाग में होने के कारण जनपद में उपजाऊ एंव जलोढ मिट्टी पायी जाती है। प्राचीन समय में कृषि परम्परागत यंत्रो से की जाती थी, जिसमें समय अधिक लगता था, लेकिन किसी प्रकार की पर्यावरणीय या पारिस्थितिकी की समस्या उत्पत्र नही होती थी। परंतु जनसंख्या की अतिषय वृद्वि के साथ साथ खाद्यात्र की समस्या भी उत्पत्र होने लगी, जिससे कृषि में अधिक उत्पादन हेतु नये नये प्रयोग किये जाने लगे। जिसका प्रभाव हमारे पर्यावरण और परिस्थितिकी असंतुलन की समस्या उत्पत्र होती जा रही है, जिसके अन्तर्गत कृषक अपने खेत में जैविक एवं अजैविक घटकों (पर्यावरण) में संतुलन रखने हुए कृषि कार्य करता है। खेत स्वंय एक पूर्ण परिस्थिति की तेंत्र है। खेत में पौधें, जीवागु, कवक,जीवजन्तु जैव कारक है एंव खनिज,लवण,प्राकृतिक एंव कृत्रिम खाद तथा अन्य रसायन अजैविक घटक है। ये दोनो घटक परस्पर प्रति क्रिया करते हैं एवं जब इसकी मात्रा अधिक हो जाती है तो कृषि भूमि प्रदूषित होने लगती है। वर्तमान समय में नये नये प्रयोग से इसमें और वृद्धि हुई है।***

***कीवर्ड - कृषि विकास, पर्यावरण प्रदूषण।***

----------X----------

***प्रस्तावना***

***अध्ययन का उद्देष्यः- प्रस्तावना***

कृषि विकास एक पर्यावरण का अध्ययन करना

1. क्षेत्रीय कृषि विकास के आयामों का विष्लेषण करना एंव पर्यावरणीय प्रभाव की समीक्षा करना।
2. क्षेत्र में कृषि एवं पर्यावरण का संबंध स्थापित करना और उनके महत्व को बतलाना।
3. प्राकृतिक संसाधनों के सर कृष्ण और उसकी उपयोगिता पर बल देना

**आँकडो का स्त्रोतः-** यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक आंकडो पर आधारित है। अध्ययन विषय जनपद विदिशा के कृषि विकास और पर्यावरण से सम्बन्धित है। द्वितीयक आंकडो की प्राप्ति समाचार पत्र साप्ताहिक एंव मासिक पत्रिका और सम्बन्धित आंकडे विभिन्न कार्यालयो से लिया गया है।

**अध्ययन क्षेत्रः-** प्राचीन इतिहास प्राचीनकाल में यहॉ यदुवंषी रहे है। आमीरों का अधिपत्य था, वे बडे सशक्त व बलषाली थे। मान्यता है कि वैदिक काल में किसी आर्यदेवी ने यहॉ के महिष नामक राजा को पराजित किया था, अतः आज भी यहॉ के सभी गॉवों में या भैंसासुर की पूजा होती है। श्रीमद देवी भागवत पुराण के अनुसार, वह देवी दुर्गा। महिषासुर मर्दनी कहलायी। सूर्यवंशी राजा सगर और श्रीराम के समय से वहॉ इक्ष्वाकु वंश के अधिपत्य का पता चलता है। कहा जाता है कि श्रीराम के अनुज

www.ignited.in

शत्रुघ्न ने अश्वमेघ यज्ञ के दौरान हराकर यह क्षेत्र अपने पुत्र शत्रुघाती या यूपकेतु (कहीं कहीं सुबाहु) को सौप दिया। विदिशा भारतवर्ष के प्रमुख प्राचीन नगरों एक है, जो हिंदू तथा जैन धर्म के समृद्व केन्द्र के रूप में जानी जाती है। जीर्ण अवस्था में बिखरे पडे कई खंडहरनुमा इमारतें यह बताती है कि यह क्षेत्र ऐतिहसिक एंव पुरातात्विक दृष्टि कोण से मध्य प्रदेश का सबसे धनी क्षेत्र है। धार्मिक महत्व के कई भवनों को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने या तो नष्ट कर दिया या मस्जिद में बदल दिया। महिष्मती (महेश्वर) के बाद विदिशा ही इस क्षेत्र का सबसे पुराना नगर माना जाता है महिष्मती नगरी के ह्रास होने के बाद विदिशा को ही पुर्वी मालवा की राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विदिशा भारत के मध्य प्रदेष पान्त में स्थित एक प्रमुख शहर है। यह मालवा के उपजाऊ पठारी क्षेत्र के उतर -पूर्व में अवस्थित है तथा पश्चिम में मुख्य पठार से जुडा हुआ है। ऐतिहासिक व पूरातात्विक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र मध्यभारत का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जा सकता है। नगर से दो मील उतर में जहॉ इस समय बेसनगर नामक एक छोटा सा गॉव है, प्राचीन विदिशा बसी हुई है। यह नगर पहले दो नदियों के संगम पर बसा हुआ था, जो कालान्तर में दक्षिण की ओर बढता जा रहा है। इन प्राचीन नदियों में एक छोटी सी नदी का नाम वैस है। इसे विदिशा नदी के रूप में भी जाना जाता है।

विदिशा में जन्में श्री कैलाश सत्यार्थी को 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला। विदिशा में ही राम नरेश यादव का जन्म हुआ। उनका निवाश स्थान सहजाखेडी है।

**विदिषा की जलवायु** - इसकी भौगोलिक स्थिति बडी ही महत्वपूर्ण थी। पाटलिपुत्र से कौषाम्बी होते हुये जो व्यापारिक मार्ग उज्जयिनी (आधुनिक उज्जैन) की ओर जाता था वह विदिशा से होकर गुजरता था। यह वेत्रवती नदी के तट पर बसा था, जिसकी पहचान आधुनिक बेतवा नदी के साथ की जाती है। बेतवा की सहायक नदी धसान नदी के नाम में अवशिष्ट है। कुछ विद्वान इसका नामाकरण दशार्ण नदी (धसान) के कारण मानते है। जो दस छोटी बडी नदियों के समवाय रूप में बहती थी। इस क्षेत्र की जलवायु अत्यन्त स्वास्थ्यवर्öक है। कर्क रेखा के आसपास स्थित इस क्षेत्र में न ही अधिक गर्मी। बारिष साधारणतया 40 इंच होती है। एक किवदंती के अनुसार यहॉ की अजस्र जल देने वाली बदली लंगडी है। अतः उन पर दया करके बडे बडे बादल यहॉ जल बरसा जाते है। यहॉ कभी सूखा नही पडता। विदिशा के समीप से ही विंध्य पर्वतों की श्रेणियों का सिलसिला पूर्व से पश्चिम की ओर गया है। ये श्रेणिया न तो अधिक ऊॅची है न ही लंबी और वेस नदी के किनारे गरूण स्तम्भ स्थित है। जिससे भागवत कथा प्रारम्भ होने के साक्ष मिलते हैं। पुराणों में इसकी चर्चा भद्रवती या भद्रावतीपुरम के रूप में है जैन- ग्रथों में इसका नाम भड्डलपुर या भद्दिलपुर मिलता है। मध्ययुग आते-आते इसका नाम सूर्य भैलास्वामीन के नाम पर भेल्लि स्वामिन, भेलसानी या भेलसा हो गया।

विदिशा जिले की तहसील की सूची

1 विदिशा शहरी

2 विदिशा ग्रामीण

3 गंजबासौदा

4 ग्यारसपुर

5 कुरवाई

6 लटेरी

7 सिरोंज

8 गुलाबगंज

9 पठारी

10 नटेरन

11 शमषाबाद

12 त्योंदा

विदिशा जिले में कितने गांव हैं? जिला मुख्यालय की विदिशा तहसील को विभाजित कर शासन ने एक भाग नगर और 48 गांव और दूसरा भाग 193 गांवों को तहसील में बांट दिया है। अब विदिशा में दो नई तहसील हो गई हैं। नई तहसील में आबादी 1 लाख 85 हजार 409 होगी और 16 हजार 548 हेक्टेयर क्षेत्र होगा। नई तहसील बनने से जिले में अब 12 तहसील हो जाएंगी, पहले 11 थी।

| जनपद पंचायत, | कुल ग्राम पंचायत | कुल ग्राम |
|---|---|---|
| जनपद पंचायत, बासौदा | 101 | 335 |
| जनपद पंचायत, ग्यारसपूर | 71 | 220 |
| जनपद पंचायत, कुरवाई | 75 | 230 |
| जनपद पंचायत, लटेरी | 61 | 197 |
| जनपद पंचायत, नटेरन | 84 | 272 |
| जनपद पंचायत, सिरोज | 93 | 307 |
| जनपद पंचायत, विदिषा | 92 | 306 |

**शोध प्रविधिः-** कृषि विकास समय के साथ बदलता रहता है कभी कभी एक क्षेत्र का विकास अधिक हो जाता है और दूसरे पिछड जाते है इस प्रकार क्षेत्रीय असंतुलन की स्थिति उत्पत्र हो जाती है यह स्थिति एक क्षेत्र के विकास पर अधिक संसाधनों के जुटाने से भी उत्पत्र हो जाती है। इस प्रकार क्षेत्रीय विशमताएं उत्पत्र होती जाती है। इस तरह की कृषि में क्षेत्रीय विभिन्नताएं कृषि विकास की गतियों को बताती है यह गतियां समय के साथ साथ बदलती है तथा विकास क्षेत्रों के विकास को विभिन्न स्तरनुमा बना देती है। कृषि विकास में इन स्तरों का अधिक महत्व माना जाता है क्योंकि आर्थिक द्रष्टि से एक क्षेत्र अधिक विकसित और दूसरा अविकसित हो जाता है। कृषि विकास में पूर्ण विकास की गतिया भी भिन्न होती है क्योंकि जलवायु, धरातल,मिट्टी आदि ऐसे प्राकृतिक तत्व है जो कृषि विकास को प्रभावित करते हैं। प्राचीन समय में कृषि परम्परागत यंत्रो से की जाती थी जिसमें समय अधिक लगता था लेकिन किसी प्रकार की पर्यावरणीय या परिस्थितिकी की समस्या उत्पत्र नही होती थी। परंतु जनसंख्या की अतिषय वृद्वि के साथ साथ खाद्यात्र की समस्या भी उत्पत्र होने लगी, जिससे कृषि में अधिक उत्पादन हेतु नये नये प्रयोग किये जाने लगे।जिसका प्रभाव हमारे पर्यावरण और परस्थिति की असंतुलन की समस्या उत्पन्न होती जा रही है, जिसके अन्तर्गत कृषक अपने खेत में जैविक एवं अजैविक घटकों (पर्यावरण) में संतुलन रखते हुए कृषि कार्य करता है। खेत स्वयं एक पूर्ण परिस्थितिकी तंत्र है। खेत में पौधें, जीवाणु, कवक,जीवजन्तु जैव कारक हैं एवं खनिज,लवण, प्राकृतिक एवं कृत्रिम खाद तथा अन्य रसायन अजैविक घटक है। ये दोनों घटक परस्पर प्रतिक्रिया करते हैं एवंज ब इसकी मात्रा अधिक हो जाती है तो कृषि भूमि प्रदूषित होने लगती है।

**पर्यावरण प्रदूषण (मृदा,जल,एंव वायु):-** मनुष्य ने आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक में विकास, प्रोद्योगिकी, रासायनिक खादो के उत्पादन तथा उपभोग में वृद्धि, सिचाई के साधनों एवं सुविधाओं में वृद्वि तथा विस्तार, अधिक उत्पादन वाले बीजों के विकास आदि के माध्यम से कृषि में पर्याप्त विस्तार एवं विकास यथा कृषि क्षेत्रों में विस्तार, कृषि की उत्पादकता में वृद्धि तथा शुद्व कृषि उत्पादन में वृद्वि किया है तथा निरन्तर बढती मानव जनसंख्या के कारण बढती खाद्यानों की मांग की पूर्ति तो कर दी है परंतु साथ ही साथ घातक पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म दिया है। बढती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए कृषि के विस्तार एवं विकास की गति को निष्चिय ही कायम रखना है लेकिन साथ साथ यह भी देखना होगा कि कृषि के विकास की बढती गति के कारण पर्यावरण की समस्या की भयावह न हो जाय। स्पष्ट है कि आधुनिक आर्थिक एंव प्रौद्योगिकी मानव उस चैराहे पर खडा है जिसके चारो ओर खतरा है यदि जनसंख्या वृद्धि जारी रही तो हमें कृषि विस्तार की ओर वृद्धि करनी ही होगी तथा ऐसा करते समय हमें अपने विनाश के लिये अपने ही द्वारा निर्मित समय बम से निपटने के लिये भी तैयार रहना पडेगा। आजकल मनुष्य स्वयं ही अनेक प्रकार के जहरीले तत्व पर्यावरण फैलाकर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक पर्यावरण अथवा वायुमण्डल को दोषपूर्ण बना रहा है। मनुष्य, पशु, वनस्पति जगत मात्र ही नही अपितु कला एवं संस्कृतियों के प्रतीक भी इसके विशैलेले प्रभाव से बच नही पा रहे है। मानव औद्योगिक विकास, नगरीकरण, परमाणु ऊर्जा आदि के द्वारा लाभान्वित हुआ है परंतु भविष्य में होने वाले अति घातक परिणामों की अवहेलना की है जिस कारण पर्यावरण का संतुलन डगमगा गया है।

**1. ग्रामीण प्रदूषण 2 नगरीय प्रदूषण :-** ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदूषण का मुख्य स्रोत कृषि कार्य है। कयोंकि ग्रामीण प्रदूषण मुख्य रूप से कृषि कार्यो पर ही आधारित होती है। इसे कृषि प्रदूषण भी कहते है।खेतों मे किसानों द्वारा डाली जाने वाली रसायनिक खादो, कीटनाषी,शाकनाशी एवं रोगनाशी कृत्रिम रसायनों की विषेशताएँ कृषि वाली मृदा पर आधारित है। कृषकों द्वारा फसलों की सुरक्षा हेतु कीटनाषी एंव कीट निरोधी दवाएँ विषैली होती है, जो खाद्य सामग्री को विषाक्त बना देती है।अन्य साग-सब्जियों एवं फलों के माध्यम से विषैले पदार्थो को मानव शरीर भी ग्रहण करता है। षरीर में प्रविष्ट को जाने पर यही विषैले पदार्थ अनेक रोगों के जनक बन जाते हैं।

**मृदा प्रदूषणः-** मिट्टी कृषकों का अमूल्य धन है। मिट्टिया पौधों के उद्धव विकास तथा सम्बर्द्धन के लिये प्रयुक्त होती है। पदूषित मिट्टियों में पौधों का उद्धव एवं विकास सम्भव नही होता है। मिट्टी प्रदूषण मानव जनित स्त्रोतों अथवा प्राकृतिक स्त्रोतों अथवा दानों के द्वारा उत्पत्र होता है। मिट्टी की मौलिकता में ह्रास होती है। इसकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। इसका प्रभाव जीव जन्तु, वनस्पतियों तथा मनुष्यों पर पडता है। लवण, खनिज तत्व, कार्बनिक तत्व, गैस, जल आदि का एक निष्चित अनुपात मे व्यवधान उत्पत्र होता है तब

www.ignited.in

इसकी मौलिकता में ह्रास होती है और इसे मिट्टी प्रदूषण की संज्ञा दी जाती है। मिट्टी प्रदूषण एक जटिल समस्या है। भूतल का कुप्रबन्धन इसका मुख्य कारण है। मिट्टी में अनेक खनिज एवं कार्बनिक पदार्थ होते है। जिससे पौधों का पोषण नष्ट होता है। एक बार इसकी उत्पादन क्षमता नष्ट होने पर पुनः बनने में काफी समय लगता है।

**जल प्रदूषण:-** जल समस्त जीवधारियों की एक आधारभूत आवष्यकता है। यह पर्यावरण का जीवदायी तत्व है। वनस्पति एवं प्राणियों की समस्त जैविक क्रियाओं में जल की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। मानव पेयजल के अतिरिक्त कृषि, उद्योग, परिवहन इत्यादि कार्यो के लिये जल की आवष्यकता होती। लेकिन मानव अपने ही क्रिया कलापों से इसे दूषित कर रहे है।

जल की रासायनिक,भौतिक व जैविक विषेषताओं मे मुख्यतः मानवीय क्रिया कलापों से ह्रास आ जाना ही जल प्रदूषण है। (गिलथिन)

जब प्राकृतिक या अन्य स्त्रोतों से वाह्र पदार्थ जल से मिल जाते है, जिनका दुष्यप्रभाव जीवों के स्वास्थ्य पर पडता है जल में विषाक्ता आ जाती है, जल के सामान्य आॅक्सीजन स्तर में गिरावट आती है,

**वायु प्रदूषणः-** समस्त जीवधारियों के लिए वायु एक आवयष्क तत्व है जो पृथ्वी के चारो तरफ से घेरे हुए है तथा विभिन्न गैसों का यांत्रिक मिश्रण है इससे नाइट्रोजन 78.09 प्रतिशत ऑक्सीजन 20.95 प्रतिशत आॅर्गन 0.93 प्रतिशत तथा कार्बनडाई ऑक्साइड 0.03 प्रतिशत हैं इसके अतिरिक्त नियान, क्रिप्टान, हीलियम, हाइड्रोजन, जेनान, ओजोन आदि गैसे भी वायुमण्डलमें मौजूद है। विदिशा जिले में मे निम्न प्रकार के प्लांट के कारण छतों पर सूखने के लिए डाले गये कपडो पर काले कण जमा हो जाते हैं। यही कारण आँखों की बिमारी को बढावा दे रहे है। उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाली विभिन्न प्रकार की गैंसे कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड आदि हाइड्राकार्बन्स, धुआं इत्यादि वायुप्रदूषण के प्रमुख कराक है।

पर्यावरणीय प्रदूषण के कुछ प्रभाव सामने आये हैं जो इस प्रकार है

- पर्यावरण का मृदा, वायु, जल पर प्रभाव।
- पर्यावणीय गुणवता में कमी।
- उपजाऊ भूमि का नगरीय उपयोग में उपयोग।
- मानव, पशु, पक्षी, पादप जगत पर प्रभाव।
- भूमिगत जल पर प्रभाव।
- कृषि उत्पादन पर प्रभाव।
- आधुनिक कृषि का पर्यवरण पर प्रभाव।

**निष्कर्ष**

शहर से प्रतिदिन निकलने वाला 11 एम.डी.एल.गंदा पानी नालों के जरिये वेतवा नदी में बहा दिया जाता है जो बाद में वेतबा नदी में घुल जाता है। प्रदूषण बोर्ड के सदस्यों द्वारा कुछ समय पहले विदिशा जिला में कइ स्थानों ने पानी का नमुना लिया था। जिसकी जॉच के आकडें कई स्थानों से पानी का नमूना लिया था इस की जॉच के ऑकडें वाले थे इस जहरीले पानी से कृषि योग भूमि बंजर हो रही है। वही जहरीले पानी से विभिन्न प्रकार की बिमारियों को जन्म दे रही हैं। डद्योगों की चिमनियों से निकलने वाली विभिन्न प्रकार की गैंसे कार्बन डाई ऑक्साइड, का मोर्बन मोनो-आॅक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड आदि हाइडोकार्बन्स, धुआं इत्यादि वायु प्रदूषण के प्रमुख कारक है। आधुनिक कृषि पद्धति से भी वायु प्रदूषण बढा है।

**संदर्भ**


1. शर्मा बी.एल. कृषि भूगोल साहित्य भवन आगर सन् 1989 पृ.सं. 155
2. डॉ. प्रसाद गायत्री एवं डॉ. नौटिपाल राजेश, पर्यावरण भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद सन् 2006 पृ.स.-273
3. डॉ. प्रसाद गायत्री एवं डॉ. नौटिपाल राजेश, पर्यावरण भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद सन् 2006 पृ.स.-274
4. सिंह सविन्द,पर्यावरण भूगोल,प्रयाग पुस्तक भवन,इलाहाबाद सन् 2011 पृ.स.485
5. डॉ. प्रसाद गायत्री एवं डॉ. नौटिपाल राजेश, पर्यावरण भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद सन् 2006 पृ.स.-309
6. डॉ. मामोरिया एवं डॉ. जोषी, पर्यावरण अध्ययन,साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा सन्- 2013 पृ.स.-69



**Corresponding Author**

**रमा शंकर शर्मा***

शोध विद्यार्थी, वाणिज्य विभाग, आईईएस विश्वविद्यालय, भोपाल मध्य प्रदेश एम.पी.